लोकोपकारी कार्य

हर्ष एक प्रजावत्सल शासक था, अतएव वह राज्य की आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा लोकोपकारी कार्यों में खर्च करता था। उसने बौद्ध धर्म के प्रचारार्थ बिहार तथा स्तूपों का निर्माण कराया था। किन्तु सबसे प्रशंसनीय बात यह थी कि वह नालन्दा के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय को बहुत दान दिया करता था।

हर्ष की शासन-प्रणाली के अध्ययन से उसके व्यक्तित्व की महानता प्रकट होती है और उसकी गणना भारत के प्रजावत्सल शासकों में की जाती है।

हर्ष के व्यक्तित्व का मूल्यांकन

हर्ष प्राचीन भारत के शासकों में निस्सन्देह महान् सुविख्यात और आकर्षक व्यक्तित्व का है। समुद्रगुप्त की तरह हर्ष ने राज्यों पर विजय प्राप्त की और विद्वानों को आश्रय प्रदान किया, तथा अशोक की भाँति उसने बौद्ध धर्म-को राजाश्रय प्रदान किया।

(१) साम्राज्य निर्माता

भारतीय इतिहास में हर्षवर्द्धन की अपेक्षा कई महान् और प्रसिद्ध साम्राज्य निर्माता हुए हैं। उसके पहले प्राचीन भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य, कनिष्क, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य जैसे वीर विजेता उत्पन्न हुए जिनका अधिकार हर्ष की अपेक्षा कहीं अधिक विस्तृत भू-भाग पर था और हर्ष के बाद भी महान साम्राज्य निर्माता हुए। अतएव स्मिथ का कथन गलत सिद्ध होता है कि हर्ष के बाद सम्पूर्ण भारत में उसके समान कोई साम्राज्य-निर्माता नहीं हुआ। इन तथ्यों के बावजूद भी हर्ष की सैन्य-सफलता को भुलाया नहीं जा सकता। उसके ऊपर अत्यन्त संकटापन्न परिस्थितियों में थानेश्वर और कन्नौज के दोनों राज्यों का भार आ पड़ा, किन्तु उसने अपने बाहुबल से इन दोनों राज्यों को न केवल इनके शक्तिशाली शत्रुओं से बचाया वरन् समस्त उत्तर-भारत में इनकी प्रतिष्ठा स्थापित की। आर० सी० मजूमदार ने लिखा है—

"He was undoubtedly one of the greatest king of Inida. He was called upon to rule over two distracted kingdoms in a period of turmoil, he succeeded to large extent in restoring respect for authority in tracts of Northern India."

—Dr. R. C. Majumdar.

(२) प्रजावत्सल सम्राट्

सम्राट् हर्षवर्धन के शासन-प्रबन्ध की यह प्रमुख विशेषता थी कि उसने अपनी शासन-व्यवस्था में नौकरशाही को प्रधानता नहीं दी, वरन् स्वयं अशोक की भाँति यात्राओं द्वारा जनता के सम्पर्क में आता था और उनकी कठिनाइयों के निराकरण का प्रयत्न करता था। इन शासन-यात्राओं में वह अपराधियों को दंड देता और गुणवानों को पुरस्कार देता था। उसकी शासन-व्यवस्था जनहित पर आधारित थी। अपने शासन सम्बन्धी कर्त्तव्यों के परिपालन के लिए हर्ष को बहुत परिश्रम करना पड़ता था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग के अनुसार वह अथक परिश्रमी था और सारा दिन भी उसके कार्यों के लिए पर्याप्त न था। शासन-व्यवस्था का संचालन उदार सिद्धान्तों पर आधारित है, अतएव उसके सम्पादन में कोई कठिनाई नहीं होती थी। परिवारों को

सरकारी रजिस्टरों में अपना ब्योरा दर्ज नहीं कराना पड़ता था और लोगों को बेगार के लिए बाध्य नहीं किया जाता था।

(३) धर्मपरायण हर्ष

हर्ष प्रारम्भ में शैव धर्म का अनुयायी था। सम्भवतः ह्वेनसाँग के सम्पर्क में आने पर उसका झुकाव बौद्ध धर्म की ओर हुआ। समयानुसार बौद्ध धर्म में उसकी श्रद्धा बढ़ती गई और यहाँ तक कि वह बौद्ध धर्म का उत्साही अनुयायी हो गया। उसने अपने राज्य भर में पशु-वध निषेध की आज्ञा दे दी। पशु-वध-निषेध, मांस-भक्षण के विरुद्ध कठोर दण्ड-विधान, बौद्ध-विहारों तथा स्तूपों का निर्माण इत्यादि कार्य बौद्ध-धर्म के प्रति उसकी आस्था का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त हर्ष समय-समय पर शिव और सूर्य की पूजा करता था और ब्राह्मणों को सम्मान की दृष्टि से देखता था। अतः हर्ष का धार्मिक दृष्टिकोण उदार था।

(४) महान विद्या प्रेमी और विद्वानों का आश्रयदाता

हर्ष एक महान विद्याप्रेमी और विद्वानों का आश्रयदाता था। उसको साहित्य तथा विद्वानों से बहुत प्रेम था। बाणभट्ट व मयूर जैसे धुरंधर विद्वान उसकी राजसभा को सुशोभित करते थे। वह स्वयं उच्चकोटि का लेखक और विद्वान था और विद्वानों का आदर करता था। वह विद्वानों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहता था। उसने तीन प्रसिद्ध नाटकों की रचना की थी। नालन्दा के विद्या-केन्द्र को हर्ष ने राजकीय संरक्षण प्रदान किया। उसकी उदार शासन नीति ने विद्या और साहित्य की उन्नति में महत्वपूर्ण योग दिया।

(५) महान दानी

हर्ष महान दानी सम्राट था। वह गरीबों व शिक्षा-संस्थाओं को विपुल दान देता था। प्रयाग की परिषद् में वह अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान में दे डालता था। संसार के इतिहास में दान देने में हर्ष की बराबरी और कोई सम्राट नहीं कर सकता। डा० राधा कुमुद मुकर्जी ने लिखा है—

"It was thus a record which no king in any age can possibly beat."

निष्कर्ष

हर्ष के गुणों के सम्बन्ध में डा० राधा कुमुद मुकर्जी ने लिखा है, "हर्ष के चरित्र में समुद्रगुप्त तथा अशोक दोनों के ही गुणों का समन्वय था। समुद्रगुप्त की भाँति विभिन्न दिशाओं में विजय प्राप्त करके उसने सम्राट का पद प्राप्त किया तथा देश की राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित किया, इसके उपरान्त युद्ध को सदा के लिए तिलांजलि देकर अशोक की तरह अपनी समस्त शक्ति को जनता की भलाई के कार्यों में लगाकर, देश की भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति में योग देकर उसके सांस्कृतिक आदर्श तथा महानता को विकसित किया।"

मोर्लैण्ड और चटर्जी ने लिखा है कि "शायद हम उस आदर्श शासक को एक धैर्यशाली और परिश्रमी प्रशासक, एक कुशल और वीर सैनिक, अपने धर्म में सच्चा किन्तु दूसरे धर्मों के प्रति सहिष्णु और अपने युग की मान्यताओं के मुताबिक सुसंस्कृत व्यक्ति कह सकते हैं।"

"Perhaps we may describe the ideal king (Harsha) as a